Volume 2; Issue 1
E-ISSN: 3048-6742
January to March 2025

# Sanskriti-Samvahika
# संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

**Editor-in-Chief**

**Dr. Ashwini Devi**

**Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका**

**E-ISSN: 3048-6742**

**https://sanskritisamvahika.in**

**Volume 2; Issue 1; Jan. to March, 2025; Page No. 14-20**

**Peer Review, Indexed and Refereed Journal**

# श्रीमद्भगवद्गीता तथा लोक–अभ्युदय

**डॉ0 निशा खन्ना**

**असिस्टेन्ट प्रोफेसर**

**आर्यकन्या डिग्री कालेज**

**मुट्ठीगंज, प्रयागराज**

***सारांश***

*भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन संस्कृति है। इसका विकास संस्कृत साहित्य द्वारा हुआ है। भारतीय संस्कृति में ही मानव जीवन से जुड़े सभी पहलुओं का सुगम समाधान उपलब्ध है। नैतिकता और आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का मूल आधार रही है। इसी कारण भारतीय संस्कृति विश्व का अन्य संस्कृतियों से पृथक् रही है। प्राचीन संस्कृति से जुड़े हुये प्रत्येक बिन्दु का व्यापक चित्रण संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है। संस्कृत वा.....मय में ''श्रीमद्भगवद्गीता'' नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित एक कालजयी ग्रन्थ है। अन्य शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है कि ''गीता'' सामान्य व्यक्तियों के नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित प्रश्नों के समाधान के लिये लिखा गया ग्रन्थ है, जो साक्षात् भगवान् की दिव्यवाणी है जो महाभारत रूपी समुद्र का मथा हुआ अमृत है। गीता के माहात्म्य को प्रतिपादित करते हुये भगवान श्री कृष्ण ने कहा है– ''गीता में हृदयं पार्थ''।भगवद्गीता भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति हेतु एक आदर्श ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ किसी विशिष्ट जाति, वर्ग तथा सम्प्रदाय का ग्रन्थ न होकर समस्त मानव के अभ्युदय का साधन है। यह एक नीतिशस्त्र है, जिसमें सत्य, अहिंसा, दान, तप, सहनशीलता इत्यादि नैतिक–मूल्यों का विवेचन प्राप्त होता है, जिनके द्वारा व्यक्ति, कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का ज्ञान प्राप्त करके लोक कल्याण के लिये कार्य करने में समर्थ होता है। इन्हीं नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाकर व्यक्ति सामाजिक सद्भाव को स्थापित करने में समर्थ हो सकता है।*

**मुख्य शब्द:** *भारतीय संस्कृति, श्रीमद्भगवद्गीता, लोक–अभ्युदय, नैतिक मूल्य*

श्रीमद्भगवद्गीता साक्षात् भगवान के मुखारविन्द से निकली दिव्य वाणी है। इसकी महिमा अपार और अपरिमित है। इसका यथार्थ में वर्णन करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

संस्कृत वा..... में ''श्रीमद्भगवद्गीता'' नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित एक कालजयी ग्रन्थ है अथवा इस प्रकार कहा जा सकता है कि ''गीता'' सामान्य व्यक्तियों के नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित प्रश्नों के सामाधान के लिए लिखी गयी है।

गीता सर्वशास्त्रमयी है, यह महाभारत रूपी समुद्र का मथा हुआ अमृत है। गीता के माहात्म्य को बताते हुए श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है–

''गीता में हृदयं पार्थ''

महात्मा गाँधी ने भी ''गीता'' के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा था–जब भी मैं किसी समस्या से ग्रस्त होता हूँ तो गीता का अध्ययन करता हूँ और मुझे कोई न कोई रास्ता अवश्य मिल जाता है।

गीता का सर्वातिशायी, महात्म्य है। इसमें संसार की सभी समस्याओं का समाधान निहित है तथा यह उलझनों से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो चुके मानव को जीवन जीने का सही मार्ग दिखलाती है।

भगवान के पाद–पद्म से निकलकर ''विष्णुपदी'' नाम से विख्यात भगवती भागीरथी जब त्रिलोक–पावनी हो गयी, तो उनके मुख–पद्म से निकली भगवती गीता आपाताल (यमलोक)–ब्रह्माण्ड–निकाय को पवित्र करने वाली है। गीताज्ञानामृत तो वह सर्वातिशायी दुग्धामृत है, जिसे श्रीकृष्ण संज्ञक दोग्धा ने सर्वप्रथम अर्जुन–संवाद बछड़े एवं अनन्तर उनके द्वार से साधक विद्वल्लोक के सेवनार्थ उपनिषद् रूपी गौवों से दुहा था–

''सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्स सुधीर्भोक्ता दग्धं गीतामृतं महत्।।

गीता, भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों की उन्नति हेतु एक आदर्श ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ किसी विशिष्ट जाति, वर्ग तथा समुदाय का ग्रन्थ न होकर समस्त मानव के अभ्युदय का साधन है। यह एक ''नीतिशास्त्र'' है, जिसमें सत्य, अहिंसा, क्षमा, दान, तप, सहनशीलता इत्यादि नैतिक मूल्यों का विवेचन प्राप्त होता है, जिनके द्वारा व्यक्ति कर्त्तव्य तथा अकर्त्तव्य का ज्ञान प्राप्त करके लोक–कल्याण के लिए कार्य करने में समर्थ होता है। इन्हीं नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाकर व्यक्ति सामाजिक सद्भाव को स्थापित करने में समर्थ हो सकता है।

अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि ''गीता'' में निहित ज्ञान द्वारा लोक–कल्याण कैसे हो सकता है?

आज मानव के समक्ष अनेक समस्यायें हैं, सभी प्राणी किसी न किसी कारण से दुखी हैं तथा दुःख से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो इसका समाधान ''गीता'' में उपलब्ध है, अतः इस वर्तमान युग में ''गीता'' का अवलम्बन आवश्यक है।

आज के युग में मानव स्वार्थ की भावना से प्रभावित होकर केवल अपने लाभ के विषय में ही सोचता है, किन्तु गीता, मनुष्य में स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर पदार्थ भावना की शिक्षा देती है, जिसमें मानव में ''सर्वजनहिताय, सर्वे भवन्तु सुखिनः तथा वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना जागृत होती है, जिसमें सामाजिक साम.....स्य स्थापित होकर लोक का कल्याण हो सकता है।

गीता ''असत्य'' का मार्ग त्यागकर ''सत्यमार्ग'' पर चलने का उपदेश देती है। गीता में सत्य को मानव का एक दिव्य गुण कहा गया है। ''सत्य'' सामाजिक सद्भाव को स्थापित करने की आधारशिला है। यदि समाज की नींव ''सत्य'' पर आश्रित होगी तो समाज में आपसी वैमनस्य का कोई स्थान नहीं होगा तथा इसमें समाज की उन्नति होगी और समाज से देश तथा देश से विश्व उन्नत होगा। इस प्रकार गीता द्वारा सत्यपथ पर चलने की शिक्षा प्राप्त होती है।

''गीता'' के द्वारा ''सहनशीलता'' की भी शिक्षा प्राप्त होती है। गीता का कथन है कि सुख–दुख, राग–द्वेष, हानि–लाभ, जन्म–मरण आदि अवस्थाओं में मानव को उद्विग्न न होकर समभाव रहना चाहिए। जब व्यक्ति में सहनशीलता का गुण होगा तो उसके अन्दर ''क्षमा'' यह गुण स्वयं उत्पन्न हो जायेगा। गीता में ''क्षमा'' को व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण कहा गया है। किसी के अपराध करने पर भी उसके प्रति विरोध की भावना न रखना ही ''क्षमा'' है। जब समाज में परस्पर क्षमा की भावना होगी तो ''लोक–कल्याण'' स्वयं होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

वर्तमान युग में मानव धन इत्यादि के लोभ में बाह्य विषयों की ओर उन्मुख हो रहा है, जिस कारण से उसका नैतिक और आध्यात्मिक पतन हो रहा है। ''गीता'' इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर उनपर नियन्त्रण रखने का सुझाव देती है। ''गीता'' में ''इन्द्रियों को नियन्त्रण'' में करने को मानव के एक स्वाभाविक धर्म के रूप में स्वीकार किया गया है।[1]

इन्द्रियों पर नियन्त्रण मानव के अभ्युदय के लिए आवश्यक है और लोक–कल्याण में परम सहायक भी है।

गीता आडम्बरहीन जीवन जीने की भी शिक्षा देती है, जो लोक के लिए कल्याणकारी है। गीता के अनुसार योगी पुरूष समस्त सांसारिक दुःखों का त्यागकर आत्मतत्त्व में रमण करता रहता है। उसका बाह्य जगत के आडम्बर से कोई सम्बन्ध नहीं रहता और उसका पारलौकिक कल्याण भी हो जाता है।

गीता द्वारा ''धैर्य'' की भी शिक्षा प्राप्त होती है। ''गीता'' का कथन है कि जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर भी संयम रखकर, धैर्यपूर्वक उन परिस्थितियों का सामना करना चाहिए, चाहे जितनी भी समस्यायें क्यों न आयें, किन्तु उन सभी को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए, अपने धर्म का पालन तथा कर्त्तव्य का पालन करते रहना चाहिए कभी भी कर्त्तव्यपथ से डिगना नहीं चाहिए।

यदि समाज में सभी मानवों में ''धैर्य'' गुण होगा तो देश तथा लोक का कल्याण स्वतः हो जायेगा।

आज के युग में व्यक्ति आवश्यकता से अधिक धन–संग्रह की इच्छा रखता है, अतः कुछ के पास तो आवश्यकता से अधिक धन होता है तथा कुछ की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी सम्भव नहीं हो पाती है, तब ''गीता''[2] में मनुष्य को अपनी भौतिक आवश्यकताओं से अधिक धन–संग्रह न करने का उपदेश देती है। यदि मानव अपनी आवश्यकताओं से अधिक धन–संग्रह की इच्छा का त्याग कर देगा तो इससे समाज में साम.....स्य स्थापित होगा, जिससे आपसी सद्भाव बढ़ेगा, जिससे विश्व का कल्याण होगा। ''गीता'' का कथन है कि अपनी आवश्यकता से अधिक अन्न, धनादि का ''दान'' करना चाहिए। ''दान'' देने वाले का दान वाली सम्पत्ति पर अपना अधिकार नहीं रह जाता। ''दान'' को गीता में दैवी सम्पत्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। गीता का कथन है कि ''श्रद्धापूर्वक'' दिया गया दान ही कल्याणकारी होता है, इसके द्वारा सामाजिक सम..... स्थापित करके लोक का उत्थान सम्भव हो सकता है।

विश्व को गीता की सबसे बड़ी देन है– ''निष्काम कर्मयोग'' तथा यह गीता का प्रमुख सिद्धान्त भी है। वास्तव में ''कर्मयोग'' अपने आप में केवल एक सिद्धान्त ही नहीं, अपितु एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है, जो आज भी उतना ही स.....त और उपयोगी है, जितना श्रीकृष्ण भगवान के समय में था। यह कर्मयोग न केवल परलोक के लिए ही अपितु

इहलोक के लिए भी अत्यन्त कल्याणकारी है तथा इसके द्वारा हम आध्यात्मिक ही नहीं, भौतिक क्षेत्र में भी सफल हो सकते हैं। गीता में ''कर्म'' का अर्थ है ''कर्त्तव्य''। किसी भी स्थिति में किसी भी व्यक्ति का जो नैतिक दायित्व होता है उसे ''कर्म'' कहते हैं।

''गीता'' का कथन है कि – समदृष्टि होकर प्रत्येक फल में समानुभाव रखते हुए सभी धारणाओं से निरोध होकर जनहित के लिए किया गया कार्य, यही ''कर्मयोगी'' का लक्ष्य है। इस प्रकार गीता का उपदेश है कि फल की इच्छा से सर्वथा मुक्त होकर कर्ममात्र को साध्य समझकर कर्म का अनुसरण करना चाहिए।

इस प्रकार गीता कर्त्तव्य बोध कराती है। आज के युग में लोगों को कर्त्तव्य बोध नहीं है जिस माता–पिता ने जन्म दिया, उसी की उपेक्षा हो रही है। आज की इस भाग–दौड़ की जिन्दगी में मानव स्वार्थी हो गया है। दूसरों के लिए उसके पास समय नहीं है। हमारी संस्कृति की जो ''अतिथि देवो भव'' की परम्परा रही है, वह तो अब दूर की बात त्यागपूर्वक उपभोग की शिक्षा देती है।

अपने कर्त्तव्य का त्याग कर देने वाला मनुष्य भोगों की कामना से प्रेरित होकर इच्छाचारी हो जाता है, अपने स्वार्थ में रत रहने के कारण वह दूसरे के हित, अहित की कुछ भी परवाह नहीं करता, जिससे दूसरों पर कुप्रभाव पड़ता हैं ऐसा व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन न करके अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए जीवन भर अन्यायपूर्ण रीति से धन–संग्रह करने में ही अपना व्यतीत कर देता है और गीता का कथन है कि ऐसे व्यक्ति का जीवन व्यर्थ हो जाता है।

अतः गीता मानव को ''कर्त्तव्य बोध'' कराकर सही मार्ग दिखाती है। गीता अहंभाव के त्याग की भी शिक्षा देती है।

इस प्रकार गीता के अध्ययन के द्वारा विश्व में नैतिक मूल्यों के होते हुए क्षरण को रोका जा सकता है तथा समाज में व्याप्त दोषों को दूर किया जा सकता है। गीता का अध्ययन, चिन्तन, मनन, श्रवण करके व्यक्ति जीवन में चुनौतियों का सामना करने में समर्थ हो सकता है।

गीता में प्रतिपादित विचारों को व्यवहार में अपनाकर विश्व में प्रेम तथा सद्भाव को स्थापित करके विश्व–शान्ति कायम की जा सकती है तथा विश्व में शाश्वत नैतिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखा जा सकता है तथा वेश्विक समस्याओं का निराकरण सम्भव हो सकता है, जिससे लोक का अभ्युदय हो सकता है।

गीता की महिमा अपार है, इसका यथार्थ में वर्णन कोई कर ही नहीं सकता। इतिहास, पुराणों आदि में जगह–जगह इसकी महिमा गायी गई है। यह एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है तथा ज्ञान का अथाह समुद्र है। इसका तत्त्व समझाने में बड़े–बड़े विद्वान भी असमर्थ हैं। शेष, महेश, गणेश भी इसकी महिमा को पूर्णरूपेण कहने में असमर्थ हैं।

सदियों से गीता के माहात्म्य को लोक कल्याण की दृष्टि से देखा गया है न केवल विद्वानों ने बल्कि विश्व के अनेक सफल लोगों ने ''श्रीमद्भगवद्गीता'' के महत्त्व को समझाया है और उससे प्रेरणा भी ग्रहण की है।

गीता में संसार की सभी समस्याओं का समाधान निहित है तथा यह उलझनों में किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो चुके मानव को जीवन जीने का सही मार्ग दिखलाती है।

''स्वामी विवेकानन्द'' ने गीता को अपने जीवन व्यवहार में उतारा था और आज भी पूर्व राष्ट्रपति ''डॉ0 अब्दुल कलाम'' भी गीता को प्रेरणादायी ग्रन्थ मानते हैं। दरअसल ''गीता'' लोक–कल्याण के लिए उपयोगी है। इसमें सारे वेदों, पुराणों और उपनिषदों के सार का संग्रह है। इसकी भाषा, शैली अत्यन्त सरल है, अतः कोई भी इसके उपदेशों को ग्रहण करने में समर्थ है। यह सभी शास्त्रों का निचोड़ है। आज व्यस्तता के दौर में गीता की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गयी है।

गीता के विषय में महात्मा गाँधी ने तो यहाँ तक कहा कि–''जिस प्रकार हमारे लिए पत्नी विश्व की सबसे सुन्दर स्त्री है उसी प्रकार ''गीता'' का उपदेश सभी उपदेशों में श्रेष्ठ है। गीता ''प्रेरणा का स्रोत'' है।

श्रीमद्भगवद्गीता का आध्यात्मिक मर्म यह है कि संसार एक प्रकार का युद्धस्थल है, जिसमें प्रत्येक प्राणी मूल्य और अच्छाइयों के लिए किसी न किसी रूप में बुराइयों से संघर्ष कर रहा है। गीता का संदेश यह है कि यदि अपने कर्म में निरन्तर रत रहा जाये ओर संघर्ष जारी रखा जाये तो अन्त में विजय अच्छाइयों की होती ही है।

मनुष्य को निरन्तर कर्म की ओर तत्पर रहना चाहिए। यह सम्पूर्ण लोक कर्म में बंधा हुआ है–

''नियतं कुरू कर्म त्वं कर्म ज्यायोत्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि न ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः।। – गीता–3/8

इस प्रकार ''गीता'' का लोक के अभ्युदय अर्थात् उत्थान में महान योगदान है, जिसे किसी भी काल में नकारा नहीं जा सकता है।

स्वयं वेदव्यास ने भी गीता का माहात्म्य वर्णित करते हुए कहा है–

''गीता सुगीता कर्त्तव्या, किमन्यैः शास्त्रस....हैः।

या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद् विनिसृता।। – महाभारत, भीष्मपर्व।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण – प्रो0 स....म लाल पाण्डेय
2. भारतीय दर्शन – हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा
3. भारतीय दर्शन – नन्दकिशोर देवराज
4. भारतीय दर्शन – एस.एन.दासगुप्ता
6. गीता–भूमिका – प्रो0 आद्या प्रसाद मिश्र
7. गीता – शा...रभाष्यम् – गीता प्रेस, गोरखपुर
8. गीता– साधक संजीवनी – रामसुखदास
9. गीता–तत्त्वचिन्तामणि – जयदयाल गोयन्दका